काव्य प्रकाश में शब्दशक्ति

Topic – लक्षणा शब्दशक्ति

By : Dr. Lalit Pradhan
Assistant professor Sanskrit
Govt Digvijay Autonomous PG College
Rajnandgaon Chhattisgarh

काव्यप्रकाश में शब्दशक्ति

क्र.	शब्द	अर्थ	शक्ति
1	वाचक	वाच्य	अभिधा
2	लक्षक	लक्ष्य	लक्षणा
3	व्यंजक	व्यंग्य	व्यंजना

लक्षणा शब्दशक्ति

मुख्यार्थ बाधे तद्योगे रूढितोऽथ प्रयोजनात्।
अन्योऽर्थो लक्ष्यते तत् सा लक्षणारोपिता क्रिया।।

इस कारिका में लक्षणा के लिए आवश्यक तीन शर्त बताए गए हैं।

1. मुख्य अर्थ/अभिधार्थ/संकेतितार्थ की संगति में बाधा उत्पन्न होना चाहिए।
2. मुख्यार्थ का बाध होने पर जो अर्थ उपस्थित होगा वह मुख्य अर्थ से ही संबंधित होना चाहिए।
3. रूढी अथवा प्रयोजन में से कोई एक लक्षणा के प्रयोग का कारण होना चाहिए।

उदाहरण - गंगायां घोषः

1. मुख्यार्थ बाध - जो शब्द जिस अर्थ में प्रसिद्ध है, उस अर्थ में अन्वित न होना ही मुख्यार्थ बाध है।जैसे - गंगायां घोषः इस वाक्य में गंगा का मुख्य अर्थ जल प्रवाह रूप नदी है,परंतु जल के प्रवाह में घोष = कुटी का होना संभव नही है,इसलिए यहां मुख्यर्थ बाध है।

2. तद्योग - मुख्यार्थ का लक्ष्यार्थ से संबंध।यथा - गंगायां घोषः यहां पर गंगाशब्द सामीप्यसंबंध से तट रूप अर्थ का बोध कराता है।इस प्रकार गंगायां घोषः का अर्थ गंगातटे घोषः इस अर्थ की प्राप्त हो जाता है।

3. रुढी/प्रयोजन - लाक्षणिक शब्द का प्रयोग किसी विशेष अर्थ में प्रसिद्ध हो,अथवा किसी प्रयोजन को सिद्ध करने के लिए उसका प्रयोग किया जाता है।

लक्षणा के भेद

1. लक्षण लक्षणा - गंगायां घोष:
2. उपादान लक्षणा - कुंता: प्रविशन्ति ।
3. गौणी सारोपा - गौर्वाहीक:
4. गौणी साध्यवसाना - गौरयम्
5. शुद्धा सारोपा - आयुर्घृतम्
6. शुद्धा साध्यवसाना - आयुरेवेदम्